जगमोहन चोपड़ा : छापाकला के समर्पित कलाकार

RAMESH CHANDAR MAURYA
Ph. D. Resarch Scholar, Department of Visual Arts, Himachal Pradesh University, Shimla

सार संक्षेपिका

भारत के अग्रणी छापा चित्रकारों में से एक जगमोहन चोपड़ा की कला कुछ अंशो तक पाषाण कला से अभिप्रेरित जान पड़ती है। जिसका आभास हमें मुख्य रुप से प्रयुक्त हुए गेरुआ, लाल, हरे जैसे चुनिंदा रंगों के माध्यम से होता है। 1963, 1966, 1971, 1987 के कुछ ऐसे छापाचित्रों में पाषाण कला हमें स्पष्ट दिखाई देता है। इन्ही चित्रों की बात करें तो बिना आकृतियों के भी न होने पर अपने आप में भी कुछ आकृतियां दिखाई देती हैं। इनके चित्रों का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू आध्यात्मिक है। छापाचित्र कला में जगमोहन चोपड़ां का योगदान महत्वपूर्ण है एक प्रयोगवादी छापाचित्रकार एंव कोलोग्राफ तकनीक के विकास में, छापाचित्रकला के प्रसारकः एक प्रचारक के रुप में ग्रुप 8 के संस्थापक सदस्य, एक कला आध्यापक के रुप में जगमोहन चोपड़ां का योगदान विस्तृत है।

बीज शब्द

जगमोहन चोपड़ा, छापाकला, कलाकार

भूमिका

भारत के अग्रणी छापाचित्रकारों में से एक जगमोहन चोपड़ा का जन्म सन् 1935 में लाहौर में हुआ था। जगमोहन चोपड़ा ने अपनी कला शिक्षा दिल्ली पॉलीटेक्नीक के फाइन आर्ट ललित कला विभाग से प्राप्त की जो आज ललित कलामहाविद्यालय दिल्ली के नाम से जाना जाता है।

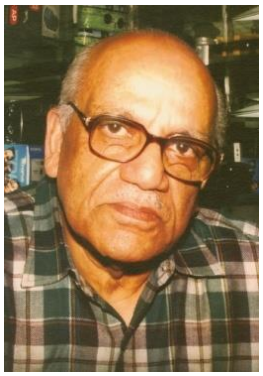

आपने अपनी शिक्षा के बाद ललित कलामहाविद्यालय में वरिष्ठ प्राध्यापक पद पर नियुक्त हुए। आपकी चित्राकंन, छायांकन एंव छापाकंन तीनों पर ही बराबर पकड़ थी। लेकिन छापाकला में प्रयोगों की असीम सम्भावनाओं ने आपको अपनी ओर आकर्षित किया। जिसके फलस्वरुप छापाकला को एक प्रयोगवादी छापाकार मिला। आपने ललित कला महाविद्यालय दिल्ली एंव चण्डीगढ़ में छापाकला विभाग को विकसित किया और कला छात्रों को छापाकला के लिए प्रेरित किया।

छापाचित्र कला में जगमोहन चोपड़ां का योगदान

- एक प्रयोगवादी छापाचित्रकार एंव कोलोग्राफ तकनीक
- छापाचित्रकला के प्रसारकः एक प्रचारक के रुप में ग्रुप 8 के संस्थापक सदस्य
- एक कला आध्यापक के रुप में जगमोहन चोपड़ां का योगदान

एक प्रयोगवादी छापाचित्रकार एंव कोलोग्राफ तकनीक

कोलोग्राफ छापा तकनीक के बारे चोपड़ां सर का विचार था कि ''मै हमेशा नई तकनीक खोजने की कोशिश करता हूँ जो कि मुझे एचिंग जैसा प्रभाव दे सके अथवा परिणाम दे लेकिन इस परिणाम के लिए अम्लाकंन प्रक्रिया का प्रयोग न किया जाये इस तकनीक में अधिकतम काम

हाथों से हो और अत्याधिक प्रयोगात्मक हो। उनका उपरोक्त विचार कोलाग्राफ तकनीक पर सर्वाधिक प्रभावी रहा निरंतर प्रयोगों एंव कला में नवीनता की खोज ने उन्हें कोलाग्राफ के रुप में एक नई एंव विशिष्ट छापा तकनीक से अवगत कराया जिसमें परिणाम एचिंग छापों से मिलते–जुलते मिले।

कोलोग्राफ तकनीक में चोपड़ा सर ने गैर परम्परागत सामग्री का प्रयोग करके कोलाग्राफ प्लेट को तैयार किया जिसमें रिलीफ और इंटैग्लियो तकनीक का प्रयोग एक साथ किया गया। कोलोग्राफी तकनीक में कार्ड बोर्ड पर अलग–अलग कागज व अन्य प्रकार की वस्तुएं गोंद से चिपकाकर सतह बनायी जाती है कार्ड बोर्ड से बनी प्लेट की यह सतह हमें जिंक प्लेट जैसी ही महसूस होती है। इसमें एक्वा का प्रभाव दिखाने के लिए इस पर गोंद का लेप करके गीलेपन पर ही रेजिन पाउडर का छिड़काव किया जाता है। इसके बाद इसे सुखाने के बाद इस पर वार्निस अथवा लैकर और स्प्रिट के मिश्रण को लगाया जाता है। इससे प्लेट पर छपाई के समय कागज नहीं चिपकता।

कोलोग्राफ तकनीक के बारे में अनुपम सूद का विचार था कि, ''यह वह समय था जो कार्डबोर्ड में छिपी अथाह सम्भावनाओं को खोजा जाये। ''अनुपम के शब्दों में कार्डबोर्ड की अपनी प्रकृति है। इस माध्यम में प्लेट की सतह से कुछ ऊपर उठे विभिन्न प्रकार के टैक्सचर युक्त रिलीफ तैयार करने की अनगिनत सम्भावनाओं की भरमार है। दूसरी बात कोलोग्राफ द्वारा कागज पर छाप लेने से धातु प्लेट की तुलना में समय कम लगता है क्योंकि धातु की प्रकृति इससे बहुत अलग है। 1960 के दशक में कोलोग्राफ तकनीक के विकास के लिए जिंक प्लेट की कमी भी जिम्मेदार थी क्योंकि इस समय चीन भारत युद्व चल रहा था जिसकें कारण जिंक प्लेट आसानी से उपलब्ध नही हो पाती थी, इसकी अपेक्षा कार्डबोर्ड आसानी से उपलब्ध थे।

छापा चत्रकला के प्रसारकः एक प्रचारक के रुप में ग्रुप 8 के संस्थापक सदस्य

भारतीय कला का यह वह समय था जब भारतीय कला में छापाकला अपने अस्तित्व की तलाश में थी। इस समय तक मूर्तिकला एंव चित्रकला को लोग सहर्ष स्वीकार कर लेते थे किंतु छापाचित्रों को नहीं। ऐसे में चोपड़ा सर ने काफी सोच विचार कर एक ग्रुप की स्थापना की जो भारतीय कला इतिहास में ग्रुप–8 के नाम से प्रसिद्ध है। इसके संस्थापक सदस्य योगशक्ति चोपड़ा, उमेश वर्मा, लक्ष्मी दत्ता, जगदीश डे, प्रशांत विचित्रा, विजय शर्मा, अनुपम सूद थे। बाद में प्रिया मुखर्जी ,सुनीता कानविन्दे, अंजुला पाश्रिचा, सुरिंदर चोपड़ा, परमजीत सिंह, कृष्णा आहूजा, संतोष जैन, ब्रह्मं प्रकाश, वीरेन तनवर तथा सुभाष चन्द्र गुप्ता आदि ने ग्रुप 8 में अपना योगदान दिया। ग्रुप 8 ने अपने खर्च पर छापाकला को आगे बढ़ाने का कार्य किया इस ग्रुप ने छापाकारों की कलाकृतियों को कलावीथिकाओं में प्रदर्शित किया। इस ग्रुप के मार्गदर्शक के रुप में जगमोहन चोपड़ा जी ने अपना योगदान हमेशा दिया।

इस समय छापाचित्रण का स्टूडियो मात्र कला महाविद्यालय तक सीमित था लेकिन चोपड़ा सर के प्रयास एंव मेहनत से एक प्रैस मशीन उनके पूसा स्थित घर के बैठक वाले कमरे में लगाई गई । इस स्टूडियो का मुख्य उद्देश्य यह था कि जो कला छात्र छापाकला के प्रति लगाव रखता हो वह महाविद्यालय के बाद भी छापाकला में कार्य कर सके । ग्रुप 8 छापाकला के प्रचार एंव प्रसार के लिए निरंतर प्रयत्नशील था। राष्ट्रीय स्तर की बहुत सारी प्रदर्शिनियों का आयोजन इस ग्रुप ने किया लेकिन बडी सफलता 70 के दशक में मिली जब इस ग्रुप ने ग्राफिक की प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसमें वरिष्ठ कलाकारों में कृष्णा रेड्डी, कृष्णा देवयानी, कंवल कृष्णा एंव कुछ भारतीय कलाकार जो विदेशों में रह रहे थे इनमें ममतानी धवन, विश्वनाधन आदि प्रमुख छापाकार थे। इसके एक वर्ष बाद ग्राफिक के साथ फोटोग्राफी का भी प्रदर्शन किया गया इसमें उपरोक्त छापाकारों के अतिरिक्त अन्य छापाकार एंव प्रसिद्व छायाचित्रकार रघुराय, नार्गाजुन एंव एस पाल आदि थे। इस समय तक भारत में छापाकला विकसित हो चुकी थी बंगाल स्कूल के बहुत सारे कलाकार छापाकला में निपुणता प्राप्त कर चुके थे जैसे विनोद बिहारी मुखर्जी, नंद लाल बोस, सोम नाथ होर व अन्य प्रमुख कलाकार, लेकिन इनके छापों को अधिक महत्व नही दिया जा रहा था। लेकिन ग्रुप 8 के प्रयासों से कलावीथिकाओं व संग्रहालयों ने भी छापाचित्रों में भी रुचि लेना प्ररम्भ किया। इस ग्रुप ने छापाकला को प्रचारित करने के लिए वार्षिक प्रदर्शिनियों का आयोजन किया।

सन् 1968–69 के एक कार्यशाला में जगमोहन जी ने पत्रकारों एंव कालाकारों को एक साथ कार्य करने के लिए आमंत्रित किया। इस कार्यशाला में कार्य करने वाले कलाकारों के छापाचित्रों एंव तकनीकों के बारे में जनता को जागरुक करने का कार्य पत्रकारों का था एंव छापा कैसे तैयार होता है और इसे तैयार करने में प्रयुक्त हुई सामग्री के बारे में जनसाधारण को बताना था। चोपड़ा जी एंव ग्रुप 8 के प्रयासों का परिणाम है कि आज छापाकला को भारतीय कला जगत में चित्रकला एंव मूर्तिकला के बराबर सम्मान मिला।

एक कला आध्यापक के रुप में जगमोहन चोपड़ां का योगदान

जगमोहन चोपड़ां जी ने सन् 1969 में सोमनाथ होर के ललित कला महाविद्यालय से जाने के बाद ग्राफिक के इन्चार्ज बने इसके बाद उन्होंने तमाम प्रयोगों के बाद कोलोग्राफ तकनीक की खोज की विद्यार्थियों से उनका विषेश लगाव था। उन्होने विद्यार्थियों कि समस्याओं को ध्यान में रखते हुए अपने घर पर स्टूड़ियों विकिसित किया इससे उन युवा छात्रों को लाभ मिला जो महाविद्यालय के बाद छापाकला में काम करना चाहते थे लेकिन स्टूड़ियो की कमी के कारण नही कर पाते थे।

सन् 1978 में वे पदोन्नति के साथ ललित कला महाविद्यालय चंडीगढ़ गए। इस समय कला जगत में चंडीगढ़ का कोई विषेश महत्व नहीं था। उन्होंने वहाँ पर कला विषेशकर छापाकला को

विकसित किया। यहाँ पर उन्होने वार्शिक छापाकला कार्यशालाओं का आयोजन आरम्भ किया। इन कार्यशालाओं में वुडकट, एचिंग और लिथोग्राफी के साथ–साथ अन्य तकनीकों पर भी कार्य हुआ। इन कार्यशालाओं में कैरोल समर कार्यशाला सबसे प्रमुख थी, इसकी विशेषता यह थी कि भारतीय कलाकारों के साथ विदेशी कलाकारों ने भी छात्रों के साथ अपने अनुभवों को बांटा। यह जगमोहन जी की ही मेहनत का ही परिणाम था कि भारतीय छापाकारों की एक बड़ी पौध विकसित हुई जिन्होनें अपनी कलाकृतियों एंव तकनीकों से अपना व्यक्तिगत योगदान दिया।

इनकी कला कुछ अंशों तक पाषाण कला से अभिप्रेरित जान पड़ती है। जिसका आभास हमें मुख्य रुप से प्रयुक्त हुए गेरुआ, लाल, हरे जैसे चुनिंदा रंगों के माध्यम से होता है। 1963, 1966, 1971, 1987 के कुछ ऐसे छापाचित्रों में पाषाण कला हमें स्पष्ट दिखाई देता है। इन्हीं चित्रों की बात करें तो हमें बिना आकृतियों के भी न होने पर अपने आप में भी कुछ आकृतियां दिखाई देती हैं। इनके चित्रों का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू आध्यात्मिक है जो सन् 1963 के छापाचित्र कम्पोजीशन में दिखाई देता है

इनकी कला कुछ अंशो तक पाषाण कला से अभिप्रेरित जान पड़ती है। जिसका आभास हमें मुख्य रुप से प्रयुक्त हुए गेरुआ, लाल, हरे जैसे चुनिंदा रंगों के माध्यम से होता है। 1963, 1966, 1971, 1987 के कुछ ऐसे छापाचित्रों में पाषाण कला हमें स्पष्ट दिखाई देता है। इन्ही चित्रों की बात करें तो हमें बिना आकृतियों के भी न होने पर अपने आप में भी कुछ आकृतियां दिखाई देती हैं। इनके चित्रों का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू आध्यात्मिक है जो सन् 1963 के छापाचित्र कम्पोजीशन में दिखाई देता है

चित्र 1 : कम्पोजीशन, कोलोग्राफ

उन्होनें कला जगत को कोलोग्राफ जैसी छापा तकनीक दी जो कि तनिक भी हानिप्रद नही है और जिसमें छापों का परिणाम एचिंग जैसे मिलते है। यह तकनीक एचिंग से कम मंहगीं और सर्वसुलभ है। छापाकला में इनके योगदान को देखते हुए इन्हें कला रत्न एंव दो बार 1968 और 1970 में ललित कला का राष्ट्रीय सम्मान सहित अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

उपसंहार

चोपड़ा जी जीवन पर्यंत छापाकला एंव कला की अन्य विधाओं को प्रचारित एंव प्रसारित करते रहे। अपने जीवन काल में उन्होनें छापाकला को आगे बढ़ाने में जो प्रयत्न किये वे अविश्मरणीय है

उनके प्रयासों से ही आज छापाकला का विकास हो सका है जो छापाचित्र पहले कला बाजार में आसानी से नहीं बिकते थे वे अब आसानी से कला प्रेमियों द्वारा संग्रहीत किए जा रहे है। उनके एंव ग्रुप 8 के प्रयासों से ही आज भारत में छापाकला का अपना अस्तित्व एंव प्रतिष्ठा है।

संदर्भ सूची

साखलकर र० वि० (1999), आधुनिक चित्रकला का इतिहास, हिन्दी ग्रंथ अकादमी राजस्थान
कुमार डॉ० सुनील (2000), भारतीय छापाचित्रकला का इतिहास, भारतीय कला प्रकाशन
मागो प्राणनाथ (2006), भारत की समकालीन कला एक परिप्रेक्ष्य, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया
भारद्वाज विनोद (2006), वृहद आधुनिक कलाकोष, वाणी प्रकाशन
शुक्ल रामचंद्र (1995), आधुनिक भारतीय कला, संगम प्रकाशन इलाहाबाद
शर्मा श्याम (2013), छापाकला, साहित्य संगम इलाहाबाद
मल्टीपल एनकाउन्टर्स (2012), इण्डो यू०एस०प्रिंट एगजीविशन–ललित कला अकादमी नई दिल्ली
रेट्रोस्पेक्टिव एग्जीविशन (2012) जगमोहन चोपड़ा, आल इंडिया फाईन आर्ट एण्ड क्राफ्ट सोसाइटी नई दिल्ली